खिड़की के सहारे खुलता जीवन का रहस्य
दीवार में एक खिड़की रहती थी के संदर्भ में

शुभम
शोधार्थी (पीएच. डी.),
सिक्किम विश्वविद्यालय, गंगटोक, सिक्किम

सारांश
विनोद कुमार शुक्ल अपने शैली के विशिष्ट रचनाकार हैं। भाषा और शिल्प -वैशिष्ट्य के स्तर पर उनके उपन्यास अन्यतम है। 'दीवार में एक खिड़की रहती थी' उपन्यास में रघुवर प्रसाद और सोनसी की प्रणय –कथा है जिसमें पूरा परिवेश गुंजायमान है। पात्रों का संवाद पेड़ –पौधे, हाथी, पक्षियों आदि से होता है। यहाँ एक ठेठ भारतीय प्रेम कथा का आदर्श हमारे सामने आता है। तमाम पात्र अभावग्रस्तता से जूझते हुए भी जीवन को खुलकर जीते हैं। कोई सामाजिक या राजनैतिक उथल –पुथल की माँग पूरे उपन्यास में कहीं नहीं मिलता। होने और न होने का रहस्य उस 'खिड़की' के सहारे खुलता है। उपन्यास में प्रकृति और मानव का जो संबंध दर्शाया गया है उसमें दोनों एकाकार हो गए हैं। कविताई भाषा और प्रयोगधर्मी शिल्प के कारण इस उपन्यास के कथ्य पर प्रायः कम ही बात होती है। अपने युगीन संत्रास, रोष, बुराइयों आदि के स्थान पर सभी पात्रों में जीवटता के गुण के कारण इस उपन्यास को रेणु की परंपरा से भी जोड़कर देखा जाता है। भाषा और संवादशैली के कारण उपन्यास काव्यमय प्रतीत होता है।

बीज शब्द
काव्यात्मक भाषा, निम्नमध्यमवर्गीय जीवन, जादुई यथार्थवाद

'दीवार में एक खिड़की रहती थी' उपन्यास में एक निम्नमध्यमवर्गीय पात्र रघुवर प्रसाद की कहानी है। रघुवर प्रसाद इस देश के बहुसंख्य आबादी के नायक हैं जो सारी कठिनाइयों से लड़ते हुए अपने सपनों के भरोसे जीते हैं। भूमंडलीकरण के बाद हमारे देश में सामाजिक और पारिवारिक स्तर पर कई बदलाव आए। बाजारवाद ने निम्न तबके के लोगों को भी बड़े बड़े सपने देखने के लालच दिए , उपन्यास में हाथी का किरदार उसी सपनों की दुनिया की पहली सीढ़ी है। रघुवर प्रसाद प्रायः इससे बचने की कोशिश करते हैं परन्तु उनसे हाथी पर बैठने का मोह नहीं जाता। उपन्यास में मानवीय पात्रों के साथ-साथ पेड़, पौधे, हाथी, जुगनू आदि से भी संवाद स्थापित किया गया है। उपन्यास में छह अलग अलग शीर्षक दिए गए हैं। प्रत्येक शीर्षक उस भाग का काव्यात्मक सारांश प्रतीत होता है –

1. हाथी आगे आगे निकलता जाता था और पीछे हाथी की खाली जगह छूटती जाती थी। [1]
2. दृष्टि के जल से बूझकर सूर्य चन्द्रमा हो गया था। और अल्पना का बना हुआ कमल पानी में तैर रहा था।[2]
3. दोनों जागे थे। और सबकुछ नींद में झूम रहा था । तालाब नींद में तालाब था। आकाश नींद का आकाश था।[3]
4. पेड़ों के हरहराने की आवाज में चिड़ियों के चहचहाने की आवाज बैठी थी।[4]
5. रात के बीतने से जाता हुआ अँधेरा शायद हाथी के आकार में छूट गया था। ज्यों ज्यों सुबह होगी हाथी के आकार का अँधेरा हाथी के आकार की सुबह होकर बाकि सुबह में घुलमिल जाएगी।[5]
6. रात भर अँधेरे का इतना साथ था कि दिन का उजाला बहुत उजाला लग रहा था। लगा कि एक सूर्य से इतना उजाला नहीं हो सकता ,दो सूर्य होंगे।[6]

इस उपन्यास में प्रकृति और मनुष्य के बीच कोई विभाजक रेखा नहीं है। दोनों एक दूसरे के जीवन में बेरोकटोक आवाजाही करते हैं। 'मिथक की रचना उस समय हुई जब मानव और प्रकृति के बीच की विभाजक रेखाएँ स्पष्ट नहीं थी-दोनों एक सार्वभौम जीवन में सहभागी थे। वे परस्पर सहयोग एवं संघर्ष के सूत्रों से बंधे हुए थे और चेतन मानव का मन अज्ञात रूप से प्रकृति की घटनाओं को अपने जीवन की घटनाओं तथा अनुभवों के माध्यम से समझने का प्रयास करता था'[7]

उपन्यास में वर्णित प्रकृति-चित्रण किसी प्राचीन पौराणिक कथा की तरह ही है । रघुवर प्रसाद और सोनसी के जीवन में उस छोटे परिवेश की ही महत्वपूर्ण भूमिका है । दैनिक जीवन की हर घटना पेड़ पौधों, पक्षियों आदि के साथ ही पूरी होती है । उपन्यास में ठंडी हवा बहती है, जंगली फूलों की गंध है, चिड़ियों का कलरव, पेड़ ,फूल ,दूब ,गंध ,रँगोली ,गोबर की चौक ,गीली मिट्टी की लेप ,तालाब ,इंद्रधनुष सब हैं । जब कोई पात्र बोलता है तो पूरे वातावरण को बोलते हुए सुना जा सकता है । इस क्रम में प्रकृति और मानव के बीच कोई भेद नहीं रह जाता है । 'आम के पेड़ के शरीर का रंग और नीम के पेड़ के शरीर का रंग एक जैसा काला था ।'[8]

विनोदकुमार शुक्ल दैनिक अनुभवों के रचनाकार हैं। उनकी दृष्टि में छोटी छोटी घटनाएं भी हमारे जीवन को भीतर तक प्रभावित करती है । रघुवर प्रसाद के अगल बगल के लोग हर सुख दुख में उनके साथ होते हैं। चाहे घर से पापा, मम्मी, छोटू का आना हो या साधु के द्वारा हाथी को लावारिस रघुवर प्रसाद के घर के पास छोड़ जाना, हर समय पड़ोसियों की महत्वपूर्ण उपस्थिति दर्ज होती है। अतिथियों के सत्कार में पूरा मुहल्ला शामिल रहता है । नब्बे के दशक का सामाजिक विघटन यहाँ लोगों के मेलजोल को प्रभावित नहीं करता। विनोदकुमार शुक्ल अपने सभी पात्रों को इससे बचा ले जाते हैं । उपन्यास की गहराई में रघुवर प्रसाद और सोनसी की प्रणय कथा है। ऐसी कथा जिसमे कोई शोर –कोलाहल नहीं है। हर परिस्थिति में दोनों खुश हैं । यद्यपि सोनसी का स्वरूप गँवई पत्नी की है किंतु वह सारी रूढ़ियों से मुक्त है । सोनसी में एक आदर्श भारतीय नारी की संकल्पना परिलक्षित होती है –

विनोदकुमार शुक्ल दैनिक अनुभवों के रचनाकार हैं । उनकी दृष्टि में छोटी छोटी घटनाएं भी हमारे जीवन को भीतर तक प्रभावित करती है । रघुवर प्रसाद के अगल बगल के लोग हर सुख दुख में उनके साथ होते हैं । चाहे घर से पापा, मम्मी, छोटू का आना हो या साधु के द्वारा हाथी को लावारिस रघुवर प्रसाद के घर के पास छोड़ जाना, हर समय पड़ोसियों की महत्वपूर्ण उपस्थिति दर्ज होती है । अतिथियों के सत्कार में पूरा मुहल्ला शामिल रहता है । नब्बे के दशक का सामाजिक विघटन यहाँ लोगों के मेलजोल को प्रभावित नहीं करता । विनोदकुमार शुक्ल अपने सभी पात्रों को इससे बचा ले जाते हैं ।

'रघुवर प्रसाद को मालूम नहीं था कि सोनसी जाग रही है , सोनसी को मालूम था कि रघुवर प्रसाद जाग रहे हैं।'[9] दोनों के मिलन के समय भी प्रकृति वहाँ विद्यमान है। पेड़, पौधे, फूल सब उन दोनों की खुशियों में झूमते हैं ।

विनोदकुमार शुक्ल ने हिंदी उपन्यास परंपरा में साठ के दशक में ऊपजी एक किस्म की नकारात्मकता को खारिज करते हुए एक ऐसी शैली विकसित की जिसे कई समीक्षकों द्वारा 'जादुई–यथार्थवाद' की संज्ञा दी है । लेकिन इस शैली से उपन्यास का कथ्य कहीं से भी कमजोर नहीं होता । 'उनके उपन्यासों का प्रभाव भले ही जादुई कहा जा सके ,उनकी शैली और कथ्य में कोई जादुई चालाकी ,तरकीब या नियत नहीं है।'[10]

भाषा-प्रवाह के कारण उपन्यास में काव्यात्मक तत्व हावी रहता है । वाक्य छोटे -छोटे हैं । संवाद अनायास ही कविता बन जाती है।

"अच्छी गरम चाय थी। "
गाढ़ा गरम दूध था –पत्नी ने सुना ।
"मैं भी तुम्हारे साथ घूमने चलूँगी "
पत्नी ने कहा ।
मैं भी तुम्हारे साथ घुड़सवारी करूँगी
–अबकी बार रघुवर प्रसाद ने सुना।[11]

रघुवर प्रसाद सोनसी के साथ अक्सर खिड़की के उस पार जाते हैं । एक बार विभागाध्यक्ष को भी लेकर जाते हैं । विभागाध्यक्ष को इस जगह से मोह भी होता है और आश्चर्य भी ।

'बड़ी सुंदर जगह है रघुवर प्रसाद । यह जगह मुझे मालूम नहीं थी। '[12]

रघुवर प्रसाद और सोनसी को नियमित रूप से एक बुढ़िया मिलती है । वह दोनों को नहाने के उपरांत चाय बनाकर देती है । दोनों इसके बाद वापस पुराने कमरे में आ जाते हैं । उपन्यास में खिड़की निम्न-मध्यमवर्गीय समाज के सपनों का प्रतीक है । वे सारे स्वप्न जो वास्तविक जीवन में पूरे नहीं हो सकते उसे खिड़की के उस पार देखा जा सकता है । रघुवर

प्रसाद के पास एक छोटा सा कमरा ही है जिसमें वो अपनी पत्नी के साथ रहते हैं । गाँव से अक्सर उनके पापा, मम्मी, भाई छोटू आते रहते हैं । उनकी सारी ख्वाहिशें जब उस कमरे में पूरी नहीं होती तब वो पत्नी के साथ उस तरफ चले जाते हैं । खिड़की मानव मन का ही प्रतीक है जिसमें अपने अधूरे सपनों को देखा जा सकता है।

'इस उपन्यास में खिड़की का अर्थगर्भ प्रतीक है । यह खिड़की दीवार में ही नहीं प्रत्येक व्यक्ति के मन में भी होती है। मन की खिड़की ही हृदय देश के मनोज्ञ मनोरोग से साक्षात्कार कराती है।'[13]

रघुवर प्रसाद और सोनसी के जीवन में उस खिड़की के अलावा हाथी भी है जिसको लेकर कथ्य में उत्सुकता बनी रहती है । हाथी के सहारे ही लेखक वास्तविक भवभूमि से ऊपर उठता है । रघुवर प्रसाद के स्वप्नों की शुरुआत भी वहीं से होती है । इन सारे स्वप्नों के अर्थ लगाने से ही पात्र के मनोभावों से जुड़ा जा सकता है। उपन्यास में विनोदकुमार शुक्ल ने न होने को होने में व्यक्त किया है हमलोगों को उस होने को न होने के अर्थ में समझना चाहिए । रघुवर प्रसाद और सोनसी का जो रोमांस है वह उनकी अधूरी इच्छाएं हैं ।

'विनोदकुमार शुक्ल जिसे नहीं होना कहते हैं, वह सामने नहीं है मन में है । वह वांछित है ,यथार्थ का ही एक संभव रूप है । स्वप्न से मिलता-जुलता।'[14]

पूरे उपन्यास में किसी भी राजनैतिक या सामाजिक परिवर्तन की माँग नहीं है । विनोदकुमार शुक्ल ने जिस परिवेश को गढ़ा है वह अपने युगीन परिवर्तनों में अक्षुण्ण है । महाविद्यालय या शिक्षा व्यवस्था के संदर्भ में भी छिटपुट व्यंग्य ही हैं । विनोदकुमार शुक्ल की शैली में आदिवासी रहन-सहन, खानपान, वेशभूषा आदि स्वतः विद्यमान है।

'यूं तो इस उपन्यास के केंद्र में एक निम्न मध्यमवर्गीय परिवार है लेकिन इस परिवार के मुखिया रघुवर प्रसाद की चिंताएं कुछ विचित्र किस्म की है। कभी लावारिस साइकिल का मिलना उनकी समस्या बनती है तो कभी हाथी का लावारिस हो जाना।'[15]

'दीवार में एक खिड़की रहती थी' उपन्यास अपने कथ्य ,शिल्प एवं काव्यमयी भाषा तीनों ही स्तरों पर एक विशिष्ट उपन्यास है ।

संदर्भ ग्रंथ :-

1. शुक्ल, विनोदकुमार, 'दीवार में एक खिड़की रहती थी', (नयी दिल्ली :वाणी प्रकाशन,2019),पृष्ठ 11
2. वही, पृष्ठ 36
3. वही, पृष्ठ 59
4. वही, पृष्ठ 82
5. वही, पृष्ठ 108
6. वही, पृष्ठ 139
7. डॉ नगेन्द्र, 'मिथक और साहित्य', (नयी दिल्ली: नेशनल पब्लिशिंग हाउस, 1987),पृष्ठ 7
8. शुक्ल, विनोदकुमार, 'दीवार में एक खिड़की रहती थी',(नयी दिल्ली: वाणी प्रकाशन,2019),पृष्ठ 14
9. वही, पृष्ठ 66
10. खरे, विष्णु , "हिंदी का अपना पहला 'नेटिव जीनियस", 'पाखी',1-2 (अक्टूबर-नवंबर,2013),पृष्ठ 27
11. शुक्ल,विनोदकुमार, 'दीवार में एक खिड़की रहती थी',(नयी दिल्ली: वाणी प्रकाशन,2019),पृष्ठ 35
12. वही, पृष्ठ 46
13. तिवारी,रामजी, 'रचना-मीमांसा', (नई दिल्ली: सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन,2017),पृष्ठ 157
14. त्रिपाठी,विश्वनाथ, "नहीं होने में क्या देखते हैं", 'पाखी',1-2(अक्टूबर-नवंबर,2013),पृष्ठ 22
15. यादव,वीरेंद्र, "राजनीतिक निर्वासन या कलात्मक उपलब्धि", 'पाखी',1-2(अक्टूबर-नवंबर,2013),पृष्ठ 106

हिंदी

हिंदी जिसके मानकीकृत रूप को मानक हिंदी कहा जाता है, विश्व की एक प्रमुख भाषा है एवं भारत की एक राजभाषा है। केन्द्रीय स्तर पर भारत में दूसरी आधिकारिक भाषा अंग्रेज़ी है। यह हिंदुस्तानी भाषा की एक मानकीकृत रूप है जिसमें संस्कृत के तत्सम तथा तद्भव शब्दों का प्रयोग अधिक है और अरबी-फ़ारसी शब्द कम हैं। हिंदी संवैधानिक रूप से भारत की राजभाषा और भारत की सबसे अधिक बोली और समझी जाने वाली भाषा है। हिन्दी भारत की राष्ट्रभाषा नहीं है क्योंकि भारत के संविधान में किसी भी भाषा को ऐसा दर्जा नहीं दिया गया है। एथनोलॉग के अनुसार हिन्दी विश्व की तीसरी सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है। विश्व आर्थिक मंच की गणना के अनुसार यह विश्व की दस शक्तिशाली भाषाओं में से एक है।